1

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तग भद्रम्। अथर्व. 7/18/2

जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।

Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 42, अंक 6 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 24 दिसम्बर, 2018 से रविवार 30 दिसम्बर, 2018

विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

देश-विदेश में मनाया गया स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

नई दिल्ली में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के 92वें बलिदान दिवस पर

वृहद् शोभायात्रा एवं विशाल जनसभा सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य, के तत्वावधान में राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज के प्रेरणा स्तंभ स्वामी श्रद्धानन्द के 92वें बलिदान दिवस पर विशाल शोभायात्रा एवं सार्वजनिक सभा का आयोजन 25 दिसम्बर 2018 को रामलीला मैदान में किया गया। प्रातः काल 8.30 बजे से 9:30 बजे तक आचार्य सहदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में बलिदान भवन में, श्री राजकुमार आर्य के संयोजन से तथा आर्य समाज नया बांस के सहयोग से यज्ञ संपन्न हुआ, जिसमें आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली व आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के पदाधिकारियों ने बडे उत्साह पूर्वक भाग लिया। श्री महेन्द्र गर्ग व श्रीमती श्रुति गर्ग, श्री देवेंद्र वर्मा व श्रीमती पूजा वर्मा तथा श्री गौरव सिंघल व कनिष्का सिंघल मुख्य यज्ञमान बनें। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि यजमानों को उत्तम स्वास्थ व सौभाग्य प्राप्त हो और वे इसी तरह वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में सहयोग देते रहें।

- शेष पृष्ठ 5, 6 एवं 7 पर

महाशय राजीव गुलाटी जी को आर्य गौरव सम्मान प्रदान करते महाशय धर्मपाल जी, धर्मपाल आर्य जी, सतीश चड्डा, सुरेन्द्र रैली, अरुण प्रकाश वर्मा, विक्रम नरुला, जोगेन्द्र खट्टर, योगेश आर्य, आचार्य ऋषिपाल, राजेन्द्र कुमार एवं अन्य

आस्था टीवी पर देखिए
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
रविवार 30 दिसम्बर, 2018
दोपहर 1:30 से 3:00 बजे
सभी को सूचित करें

स्वामी श्रद्धानन्द जी के 92वें बलिदान दिवस पर आयोजित जन सभा में अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते दिल्ली के महापौर श्री आदेश कुमार गुप्ता जी एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के प्रधान डॉ. वेदपाल जी एवं इस अवसर पर उपस्थित आर्यजनों से भरा रामलीला मैदान।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान : 5 जनवरी से 13 जनवरी, 2019

आओ ! "सत्यार्थ प्रकाश" प्रचार-प्रसार यज्ञ में अपनी आहुति दें

आपकी एक आहुति कर सकती है किसी का जीवन परिवर्तन

स्टाल उद्घाटन
5 जनवरी, 2019
प्रातः 11:30 बजे

हिन्दी : हॉल नं. 12
स्टाल : 222-231

बाल साहित्य
हॉल नं. 7डी स्टाल : 188

मेला समापन
13 जनवरी, 2019
रात्रि 8 बजे

सत्यार्थ प्रकाश अल्प मूल्य केवल मात्र 10/- रुपये में देने के लिए अपनी ओर से आर्थिक सहयोग प्रदान करें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश जोकि 50/- रुपये का है, सभा को 30/- रुपये में प्राप्त होता है। आप द्वारा प्रदान की गई 20/- सब्सिडी (छूट) से इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। अतः आप सभी दानी महानुभावों एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि अधिकाधिक प्रतियां 10/- में उपलब्ध कराने हेतु अधिकाधिक छूट सहयोग प्रदान करें।

आप अपना सहयोग सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर में नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनिआर्डर के माध्यम से भेज सकते हैं तथा सभा के निम्नांकित बैंक खाते में सीधे भी जमा करा सकते हैं। कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम बनाएं।

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 0133002100005251 पंजाब नेशनल बैंक, IFSC - PUNB0013300 MICR - 110024092

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री मनोज नेगी जी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप व्हाट्सएप्प करें या aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें। समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है।

स्टाल पर समय दान करने वाले सहयोगी कार्यकर्त्ता अपने नाम श्री सुखबीर सिंह आर्य (9350502175, 9540012175) को नोट कराएं।

वेद-स्वाध्याय

शरद् की ऋतुचर्या

लक्षण- जब वर्षा समाप्त हो जाती है, आकाश बादलों से निर्मल हो जाता है तो यह वर्षा और सर्दी (हेमन्त) के मिलानेवाली बीच की ऋतु 'शरदृतु' कहलाती है। इसके महीने आश्विन और कार्तिक हैं।

महिमा- यह ऋतु वसन्त ऋतु के मुकाबले की और उसके समान है। वसन्त से गर्मी की छमाही शुरू होती है तो इस शरद् से सर्दी की छमाही का प्रारम्भ होता है, अत: इसमें भी न ऋतु अतिगर्म होती है और न अतिशीत। बड़ा सुहावना मौसम होता है। मीठा-मीठा शीत पड़ना प्रारम्भ होता है। सब वृक्ष-वनस्पतियाँ वसन्त में नवांकुर से पल्लवित और पुष्पित होती हैं तो शरद् में ये वनस्पतियाँ पकती हैं, फलयुक्त हो परिपक्वास्था में आ जाती हैं। वसन्त में कफ कुपित होता है तो इसमें पित्त कुपित होता है। हठयोगी लोग इस ऋतु में, इस शीत छमाही के प्रारम्भ में भी षट्कर्मों द्वारा शरीर-शुद्धि किया करते हैं, विशेषतया इसमें पित्त की अधिकता का निवारण करते हैं, जैसेकि वसन्त में कफ का निवारण, एवं वसन्त के समान यह ऋतु भी प्राण-सम्बन्धी क्रियाओं के अभ्यास करने के लिए उत्तम है। प्राणायाम का नया प्रारम्भ तथा प्राणोत्थान के अभ्यास इस ऋतु में करना बहुत लाभदायक होता है।

वर्षा ऋतु के उपद्रवों के हट जाने के कारण इस ऋतु का लोग बड़े उत्साह से प्रारम्भ मानते हैं, स्वागत करते हैं। प्राचीन समय में लोग इस शरदृतु से यात्रा का, राजा लोग चढ़ाई आदि का प्रारम्भ किया करते थे। वर्षा ऋत से सीले हुए या जंग लगे हुए या अन्य प्रकार से खराब हुए अपने हथियार, औाजार आदि सब वस्तुओं को तथा अपने घर को ठीक-ठाक और संस्कृत किया करते थे। हमारे देश के प्रसिद्ध दशहरा और दीपावाली त्यौहार भी इस ऋतु में आते हैं।

गुण- शरदृतु उष्ण-पित्तकारक तथा मनुष्यों में बल उत्पन्न करने वाली है। इस ऋतु में जठराग्नि और बल मध्यम अवस्था में होते हैं।

पथ्यापथ्य- वर्षा में कुपित होने वाला वायु यद्यपि इस शरदृतु के आने पर शान्त हो जाता है, किन्तु वर्षा ऋतु के जल तथा वनस्पतियों के प्रयोग से शरीर में संचित हुआ पित्त इस ऋतु में आकर प्रकुपित हो जाता है। इसलिए इस ऋतु में पित्तनिवारक उपाय करने चाहिएँ। इस समय की धूप सेकना भी अच्छा नहीं है। इससे भी पित्त-प्रकोप की सम्भावना होती है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जब तक जाड़ा अच्छे रूप में न पड़ने लग जाए, तब तक भोजन भी अल्पमात्रा में करना चाहिए। पित्त प्रकुपित होकर विषम ज्वर (मलेरिया) इस ऋतु में होता है। इसके लिए निम्बू की शिकंजवी, तुलसी की चाय, आदि का सेवन करना चाहिए। पित्त निकालने के लिए पित्त-विरेचन लेने चाहिएँ (जैसे आमलकी चूर्ण मधु के साथ या चिरायता आदि तिक्त पदार्थ का क्वाथ लेवें)। पित्त-विरेचन के लिए यह ऋतु बहुत अच्छी है।

पित्तकारक भोजन अर्थात् खट्टे, तीक्ष्ण, गरम पदार्थ, यथा-मिर्च, मसाला, तैल तथा दही आदि के सेवन से बचना चाहिए। पित्तहर मधुर, कसैले, कड़वे रस तथा हल्के शीतल भोजन खाने चाहिएँ। घी और साठी के चावल विशेष हितकारी होते हैं। दूध, गेहूँ, जौ, मूँग, ईख एवं मिसरी, कर्पूर आदि का सेवन, जलाशय व चाँदनी का सेवन इस ऋतु में हितकर है।

अति परिश्रमकारक व्यायाम तथा दिवा शयन इस ऋतु में त्यागने चाहिएँ। हिन्दी कहावत के अनुसार आश्विन में करेला तथा कार्तिक में दही नहीं खाना चाहिए।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

क्या वाकई देश में डर का माहौल है?

.....लोग डरते हैं पर तब डरते है, जब एक मासूम बच्ची को उठाकर कुछ दरिन्दे रेप कर देते हैं। .....लोग तब डर जाते हैं, जब सरकारी अस्पताल में डॉक्टर नहीं मिलता। .....हम तब तक डरे रहते हैं जब तक शाम को बेटी सकुशल घर वापिस नहीं आ जाती। .....हम तब तक डरे हुए रहते है, जब तक बिना रिश्वत दिए बेटे की नौकरी नहीं लग जाती और बिना दहेज के बेटी की शादी नहीं हो जाती। .....बिना रिश्वत और चक्कर काटे थाने से एक इन्क्वायरी तक पूरी नहीं हो जाती या बिना पैसे और विनती के बिजली का बिल ठीक नहीं हो जाती .....

जब हम टीवी ऑन करते है तब टीवी पर एंकर चीख रही होती है कि क्या देश में डर का माहौल है? फिर वह कहती है कि यह मैं नहीं कह रही, यह तो फलां नेता, अभिनेता या बुद्धिजीवी कह रहा है। इसके बाद स्टुडियों में कुछ लोग बैठे होते है जो अखलाक, पहलु खान या गौरक्षकों की दनदनाहट का हवाला देकर कहते है कि जी हाँ देश में डर का माहौल है?

फिर अचानक दूसरा पक्ष पूछ उठता है कि आज एक घटना पर डरने वाले ये लोग 1984 के दंगों पर क्यों नहीं डरे? 90 के दशक में कश्मीर में पंडितों के साथ हुई भयानक साम्प्रदायिक त्रासदी के वक्त इनका डर कहाँ था? ताज होटल पर हमले के वक्त या दिल्ली-मुम्बई में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों के समय इन लोगों को डर क्यों नहीं लगा? सवालों और जवाबों से स्टुडियों का माहौल गर्मा जाता है। अंत में हमेशा की तरह शो खत्म हो जाता है।

असल में सच यही है कि देश में कुछ लोग डरे हुए है और कुछ लोग डरा रहे है। डरे हुए ये कुछ लोग वे हैं जिनके पास करोड़ों-अरबो की संपत्ति, नाम और पहचान है या जो सत्ता की कुर्सी से बाहर हैं।

अब इन्हें डरा कौन रहा है बस कुछ ऐसे ही लोग हैं जो इन्हें डरा रहे हैं। ऐसे माहौल को लेकर कुछ लोग चिंतित भी जरुर हैं। इनमें चिंता करते हुए कुछ पत्रकार हैं, कुछ नेता हैं और कुछ अभिनेता भी शामिल हैं। देश का आम आदमी अपनी रोजी रोटी के लिए दिन रात मेहनत कर रहा है, वह अभी इस डर से बाहर है पर कोशिश जारी है कि वह भी कुछ इसी तरह का - अपना डर व्यक्त करे।

यह डर का माहौल कुछ इस तरह खड़ा किया जाता है जब एक अति उत्साहित नेता ताव में आकर बयान देता है, तब अचानक डर के कई बयान सामने आते हैं। मीडिया डर की इस व्यवस्था का हिस्सा बनी हुई है। बहुत पहले मीडिया का जुनून सार्वजनिक हित के मुद्दे होते थे पर आज उसका जुनून इस डर का माहौल खड़ा करने का रह गया है।

जब नेता डरे हुए बयान नहीं देते तब यह लोग चोटी कटने की घटनाओं को लेकर खौफनाक साउंड के साथ लोगों को डराते है। कभी बुराड़ी में एक परिवार की आत्महत्या को लेकर डरावने एपिसोड बना डालते है। यकीन न हो देखिये सुबह-सुबह सभी चैनलों पर बैठे बाबा किस तरह राहु-केतु से लेकर शनि मंगल, अमंगल, और राशियों से डरा रहे होते हैं।

हिंसा और हत्या हर एक शासक के काल में होते रहे है इससे कोई भी युग अछूता नहीं रहा है, बड़े-बड़े सम्राटों से लेकर आज की वर्तमान लोकतान्त्रिक प्रणाली तक, कोई एक वर्ष ऐसा नहीं रहा होगा, जब काल के चेहरे पर रक्त के छींटे न पड़े हों।

परन्तु उस इतिहास के एक भी पन्ने पर हमने अपनी एकता, समरसता से कभी डर को निकट नहीं आने दिया लेकिन आज स्वतंत्र रूप से बड़े-बड़े आलीशान बंगलों में सुरक्षाकर्मियों के बीच रहते हुए यदि हम भय महसूस करें तो इसमें राजनीति कितनी है और डर कितना आप स्वयं अंदाजा लगा सकते हैं?

मुझे नहीं पता अचानक सुप्रीम कोर्ट के बड़े जज क्यों डर जाते है। अचानक नसीरुद्दीन शाह क्यों डर जाते है। डर कुछ ऐसा है कि कभी अचानक से राहुल गाँधी डरकर कहते है कि देश में डर का माहौल है और पाकिस्तान जैसी स्थिति हैं। कभी आमिर खान, इसी डर के बारे में सुरक्षित देश खोजने की बात करते है तो कभी अरुण शौरी बात करते हुए कहते है कि देश में डर और बेबसी का माहौल है।

हालाँकि यह डर सबको नहीं डराता सिर्फ उन्हें डराता है, जिनको इससे डर लगता है। ऐसे ही लोगों के आस-पास डर का माहौल रचा जाता है। यही वह माहौल है जहां से एक बुद्धिजीवी दूसरे बुद्धिजीवी को, एक नेता दूसरे नेता को, एक अभिनेता दूसरे अभिनेता को डरा रहा है, इसके बाद इस डर को मीडिया परदे पर लेकर आती है ताकि देश के लोग भी इस डर को महसूस करें।

इन लोगों के मुताबिक देश का आम आदमी कुछ बोल नही पा रहा हैं, वह डरा हुआ है लेकिन क्या सच में ऐसा हो रहा है? या फिर डर का एक माहौल बनाने की कोशिश की जा रही है क्योंकि मुझे बाजारों में, सड़कों पर, मैट्रो या किसी सार्वजनिक स्थान पर डरे हुए लोग नहीं मिल रहे हैं। ऐसा नहीं है कि लोग बिलकुल निडर हैं, कभी डरते नहीं है। लोग डरते हैं पर तब डरते है, जब एक मासूम बच्ची को उठाकर कुछ दरिन्दे रेप कर देते हैं। लोग तब डर जाते हैं, जब सरकारी अस्पताल में डॉक्टर नहीं मिलता। हम तब तक डरे रहते हैं जब तक शाम को बेटी सकुशल घर वापिस नहीं आ जाती। हम तब तक डरे हुए रहते हैं, जब तक बिना रिश्वत दिए बेटे की नौकरी नहीं लग जाती और बिना दहेज के बेटी की शादी नहीं हो जाती। बिना रिश्वत और चक्कर काटे थाने से एक इन्क्वायरी तक पूरी नहीं हो जाती या बिना पैसे और विनती के बिजली का बिल ठीक नहीं हो जाता।

हमारे तो बस ये डर हैं बाकी हमारे डर नहीं है। ये जो हर रोज जो बयानों के डर खड़े किये जाते हैं ये आम आदमी के डर नहीं है। ऐसे डर देश को आर्थिक, राजनीतिक और विदेशी ताकतों से कैसे निकाल पाएंगे फिलहाल ये सोचने का समय किसी के पास नहीं हैं। बस कोई एक डरा रहा है और दूसरा डर रहा है, मुझे नहीं पता इससे देश के आम नागरिक को क्या मिल रहा है। - ***सम्पादक***

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

92वें बलिदान दिवस के अवसर पर विशेष

भारतीय समाज का एक मुक्तिदाता : स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द जी एक ऐसा नाम जिसे इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में लगभग मिटा दिया गया है। वह व्यक्तित्व जिनकी कहानी दान, त्याग, वीरता, स्वतंत्रता सेनानी और समाज सेवा के कार्यों से स्वर्ण अक्षरों से अंकित होनी चाहिए थी, उसे सिर्फ एक "हिन्दू पुनरुत्थानवादी" के रूप में चित्रित किया गया। पर जब हम इस महान आत्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन परिचय से गुजरते है तब इन महान विभूति के बलिदान के जीवंत चित्र मन में एक-एक कर अगाध श्रद्धा से भर जाते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन परिचय तब शुरू होता है जब आर्य समाज के संस्थापक और आधुनिक भारत के निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती जी देश से अंधविश्वास, सामाजिक भेदभाव की कुरुतियों और अंग्रेजी सरकार पर निडर होकर हमला कर रहे थे। उसी दौरान 22 फरवरी, 1856 को तत्कालीन अविभाजित पंजाब के जालंधर जिले के गांव तलवन में पिता नानकचंद के घर मुंशीराम नामक एक बच्चे के जन्म की किलकारी गूंजी। बाद में इसी किलकारी ने स्वामी श्रद्धानन्द बनकर समस्त धर्म और देशद्रोहियों की नींद उड़ाकर रख दी थी।

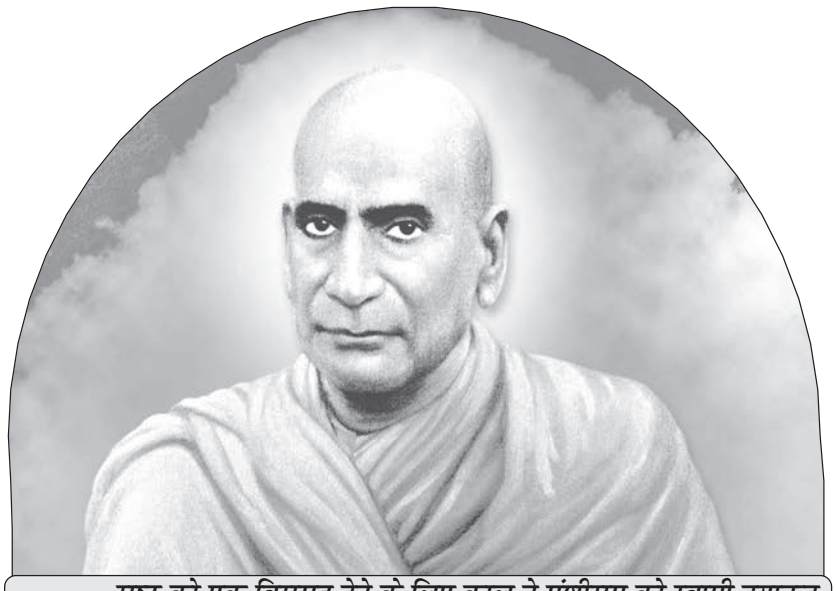

.....राष्ट्र को एक विरासत देने के लिए काल ने मुंशीराम को स्वामी दयानन्द सरस्वती से मिला दिया, स्वामी दयानन्द जी का प्रवचन सुना, उस दिव्य आत्मा के मुख से जब तत्कालीन हिंदू समाज को जगाने विषय में लम्बी चर्चा हुई तो मुंशीराम के जीवन में एकाएक महान परिवर्तन आ गया।.....

मुंशीराम की स्कूली शिक्षा वाराणसी में शुरू हुई और कानून की पढ़ाई लाहौर में समाप्त हुई। उनके पिता पुलिस इंस्पेक्टर थे। बार-बार मिर्जापुर और बरेली स्थानांतरण के कारण उनकी प्रारंभिक शिक्षा बाधित हुई थी। बड़े हुए तो तत्कालीन हिंदू समाज में अंधविश्वास, पाखण्ड और अपने लोगों में उदासीनता देखकर जीवन शैली लगभग अनियंत्रित हो गयी थी। किन्तु क्षण अनुकूल था, राष्ट्र को एक विरासत देने के लिए काल ने मुंशीराम को स्वामी दयानंद सरस्वती से मिला दिया, स्वामी दयानन्द जी का प्रवचन सुना, उस दिव्य आत्मा के मुख से जब तत्कालीन हिंदू समाज को जगाने विषय में लम्बी चर्चा हुई तो मुंशीराम के जीवन में एकाएक महान परिवर्तन आ गया।

आर्य समाज के अनुयायी के रूप में मुंशीराम ने महिलाओं की शिक्षा के लिए एक महत्त्वपूर्ण अभियान का नेतृत्व करना शुरू किया। आर्य समाज द्वारा संचालित अखबार सदधर्म प्रचारक में महिलाओं की शिक्षा के बारे में लेखों के माध्यम से गार्गी और अपाला जैसी वैदिक विदुषियों के उदाहरणों का हवाला देते हुए महिलाओं की शिक्षा के लिए अनुरोध किया। समाज में अंगड़ाई आनी शुरू हुई, असल में, जब उन्होंने अपनी ही बेटी को मिशनरी-संचालित स्कूल में पढ़ते हुए ईसाई धर्म के प्रभाव में आते हुए देखा तो भारतीय आदर्शों में निहित शिक्षा प्रदान करने का मन बनाया और अपने प्रयासों से जालंधर में पहला कन्या महाविद्यालय की स्थापना कर दी।

वित्तीय संकट, संघर्ष के थपेड़ों से जूझने के बाद, 1902 में हरिद्वार के पास ग्राम कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना कर दी ताकि खोई वैदिक संपदा के विचारों से नागरिकों में धर्म और राष्ट्रीय दृष्टिकोण पैदा किये जा सकें। यह भारत का सर्वप्रथम एक ऐसा गुरुकुल बना जिसमें जाति, पंथ, भेदभाव छुआछुत से दूर कर छात्रों को अलग-अलग कक्षाओं में एक साथ मिलकर पढने के लिए प्रेरित किया और व्यक्तिगत रूप से स्वामी श्रद्धानन्द जी एक पिता की तरह अपने छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करते रहे।

स्वतंत्रता के लिए चल रहे आन्दोलन और सक्रिय राजनीति में हिस्सा लेने के साथ स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कथित अछूत माने जाने वाले समाज के मुद्दों को उठाते हुए 1919 में अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष के रूप में अपने संबोधन में कहा था कि "सामाजिक भेदभाव के कारण आज हमारे करोड़ों भाइयों के दिल टूटे हुए हैं, जातिवाद के कारण इन्हें काट कर फेंक दिया हैं, भारत माँ के ये लाखों बच्चे विदेशी सरकार के जहाज का लंगर बन सकते है, लेकिन हमारे भाई नहीं क्यों नही बन सकते? मैं आप सभी भाइयों और बहनों से यह अपील करता हूं कि इस राष्ट्रीय मंदिर में मातृभूमि के प्रेम के पानी के साथ अपने दिलों को शुद्ध करें, और वादा करें कि ये लाखों करोड़ों अब हमारे लिए अछूत नहीं रहेंगे बल्कि भाई-बहन बनेंगे, अब उनके बेटे और बेटियाँ हमारे स्कूलों में पढ़ेंगे, उनके पुरुष और महिलाएँ हमारे समाजों में भाग लेंगे, आजादी की हमारी लड़ाई में वे हमारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होंगे और हम सभी अपने राष्ट्र की पूर्णता का एहसास करने के लिए हाथ मिलाएंगे।"

अछूतों की मदद करने और कई मुद्दों पर गाँधी जी से असहमति होने के पश्चात् स्वामी श्रद्धानंद ने कांग्रेस की उप-समिति से इस्तीफा दे दिया। हिंदू महासभा में शामिल होकर अछूत और दलित माने जाने वाली जातियों के कल्याण के लिए शुद्धि का कार्य शुरू किया। शुद्धि-आन्दोलन के द्वारा सोया हुआ भारत जागने लगा! कहते हैं जिस देश का नौजवान खड़ा हो जाता है वह देश दौड़ने लगता है! सच ही स्वामी जी ने हजारों देशभक्त नौजवानों को खड़ा कर दिया था। स्वामी श्रद्धानंद ने वर्ष 1919 में दिल्ली की जामा मस्जिद में भाषण दिया था। उन्होंने पहले वेद मंत्र पढ़े और एक प्रेरणादायक भाषण दिया। मस्जिद में वेद मंत्रों का उच्चारण करने वाले भाषण देने वाले स्वामी श्रद्धानंद एकमात्र व्यक्ति थे। दुनिया के इतिहास में यह एक असाधारण क्षण था।

स्वामी श्रद्धानंद जी ने बलात् हिन्दू से मुसलमान बने लोगों को पुन: हिन्दू धर्म में शामिल कर आदि जगदगुरु शंकराचार्य के द्वारा शुरू की परंपरा को पुनर्जीवित किया और समाज में यह विश्वास पैदा किया कि जो किसी भी कारण अपने धर्म से पतित हुए हैं वे सभी वापस अपने हिन्दू धर्म में आ सकते हैं। फलस्वरूप देश में हिन्दू धर्म में वापसी के वातावरण बनने से लहर सी आ गयी! राजस्थान के मलकाना क्षेत्र के हजारों लोगों की घर वापसी उन्हें भारी पड़ी, जब महान् सिद्धान्तों पर आधारित सांस्कृतिक धरातल पर उन्हें कोई पराजित नहीं कर सका तब 23 दिसंबर 1926 को एक धर्मांध मुस्लिम युवक अब्दुल रशीद द्वारा एक मजहबी हत्यारी परंपरा के शिकार हो गये। देश धर्म और समस्त समाज के लिए अपना घर, अपना परिवार का दान कर यहाँ तक की स्वयं को बलिदान करने वाली इन महान आत्मा को भुला दिया गया। करोड़ों भारतीयों के लिए, जिनके कल्याण के लिए उन्होंने जीवन भर दृढ़ता से काम किया, पूरा जीवन कर्मों और वैदिक धर्म कार्यों को करते हुए अंत में अपने धर्म के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाली इस महान आत्मा महात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी को आर्य समाज का कोटि-कोटि नमन। - ***राजीव चौधरी***

क्रान्तिकारियों की कथा

आजाद के अन्तिम दर्शन

गतांक से आगे -

शुक्रवार, 27 फ़रवरी, 1931। रिजर्व पुलिस लाइन्स, इलाहाबाद। प्रात:कालीन परेड के बाद सार्जेण्ट टिर्टन रिज़र्व इंस्पेक्टर के कार्यालय के कार्यालय में बैठा पेशी के कुछ काग़जात देख रहा था कि अचानक सवा नौ बजे टेलीफ़ोन की घंटी घनघनाई। पुलिस सुपरिण्डेण्ट मैज़र्स का फोन था। शुक्रवारीय अर्दली रूम न करके आज परेड के बाद ही वह लाइन से रवाना हो गया था। आर्म्ड पुलिस के 80 जवानों सहित 15 मिनट के अन्दर एलफ्रेड पार्क घेर लेने का आदेश मिला। गोली चलने की पूरी-पूरी आशंका भी व्यक्त की गयी।

तुरन्त गोरखा बिगुलर ने बिगुल फूंका। कमरबन्दी में मुस्तैद 40 जवानों ने 20-20 गोलियां बंडोलियर में रखीं और अपने-अपने 410 बोर मास्कट संभाले। शेष 40 ने लाठियां थामीं। टिर्टर्टन और हैरिस ने भी अपने-अपने वेव्ले-स्काट रिवाल्वर लोड किये और 18-18 स्पेयर राउण्ड्स पाउचों के हवाले किये। फिर चार गाड़ियों में बैठकर सब एलफ्रेड पार्क की ओर रवाना हुए।

प्रात: 9 बजे आनन्द भवन में जवाहरलाल नेहरू से भेंट करने के पश्चात् चन्द्रशेखर आज़ाद सुखदेवराज को साथ लिए एलफ्रेड पार्क पहुंचे थे। छिन्न-भिन्न हो रही पार्टी के सम्बन्ध में आवश्यक निर्णय लेने थे। दोनों एक बड़े-से जामुन के पेड़ के नीचे इन गम्भीर मसलों पर विचार-विमर्श करने बैठ गये। विश्वविद्यालय से आने वाले एक 'कोरियर' का भी इन्तजार था। शायद, कोई ज़रूरी पत्र या समाचार ला रहा हो। उसे ठीक साढ़े नौ बजे यहीं पार्क में मिलने का आदेश था।

यशपाल से इशारा मिलने पर वीरभद्र तिवारी ने दोनों को एलफ्रेड पार्क में एक जामुन के पेड़ के नीचे बैठे देखा था। वह तुरन्त शम्भूनाथ के पास पहुंचा और छूटते ही बोला, ''पंडित जी एलफ्रेड पार्क में हैं। जल्दी कीजिये।''

पूरी तैयारी तो थी ही। मैजत्रर्स को फोन खटखटाया गया आर्म्ड फोर्स के लिए। एस. पी., बी. जॉन नॉटबाबर तुरन्त अपनी कार से एलफ्रेड पार्क पहुंचा। हथियारों से लैस पुलिस ने पार्क को तीन तरफ से घेर लिया। पुलिस कप्तान मैज़र्स के साथ डिप्टी कमिश्नर बमफोर्ड पार्क के बाहर ही रहे।

मौसम सर्द था। हवा भी तेज़ थी। चन्द्रशेखर आज़ाद खद्दर की धोती, कमीज़ और ठंडी सदरी पहने (उनके पास गरम कपड़े थे ही नहीं) सुखदेवराज के साथ संजीदगी से बातें कर रहे थे।

- क्रमश:

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार : क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : 25-28 अक्तूबर, 2018 दिल्ली

मनोहारी सजावट - मुख्यद्वार, स्वागत, खूबसूरत यज्ञशाला, पंजीकरण, गौशाला, प्रदर्शनी

महर्षि दयानन्द नगर का मुख्य द्वार

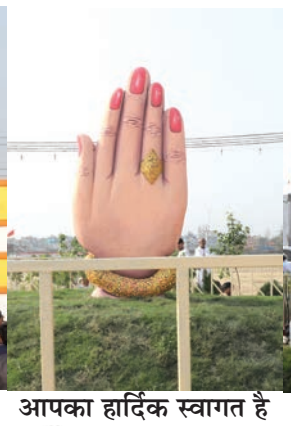

आपका हार्दिक स्वागत है

महर्षि दयानन्द सरस्वती

धरती आर्यों की

महासम्मेलन में सम्मिलित राष्ट्रों के ध्वज

विश्व का प्राचीनतम ज्ञान - ईश्वरीय वाणी वेद

योगीराज महर्षि दयानन्द सरस्वती

यज्ञ ज्योति एवं संगठन शक्ति

वृहद यज्ञशाला

लघु यज्ञशाला

रेत पर कलाकारी - क्रान्ति के प्रणेता महर्षि दयानन्द

महासम्मेलन में दिखा गुरुकुल का प्रारुप

गौसेवा का सन्देश देती गौशाला

महासम्मेलन में उमड़ी आर्यजनता - प्रवेश द्वार पर

विभिन्न सेवाओं के लिए सम्मेलन स्थल पर कार्यालय

मुख्य पण्डाल भर जाने के कारण पण्डाल के बाहर स्क्रीन पर कार्यक्रम देखते श्रद्धालुजन

विशेष नोट : उपरोक्त प्रकाशित चित्र श्रंखला अन्तिम नहीं हैं। महासम्मेलन में अपना आशीर्वाद, उद्बोधन, मार्गदर्शन, भक्ति संगीत प्रस्तुत करने वाले आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, भजनोपदेशकों, अतिथियों, व्यवस्थापकों, संयोजकों, कार्यकर्ताओं के चित्र आर्यसन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किए जाएंगे।

प्रथम पृष्ठ का शेष

श्रद्धानन्द जी के 92वें बलिदान दिवस पर आयोजित शोभायात्रा की चित्रमय झांकी

बलिदान भवन में यज्ञ के उपरान्त शोभायात्रा का नेतृत्व करते आर्यसमाज के नेतागण एवं शोभायात्रा में सम्मिलित विभिन्न झांकियाँ

नगाड़ा बजाते एवं शोभायात्रा के मार्ग में प्रदर्शन करते आर्य वीर दल के आर्यवीर

नगाड़ा बजाते एवं शोभायात्रा के मार्ग में प्रदर्शन करते आर्य वीर दल के आर्यवीर

प्रातः 10 बजे विशाल शोभायात्रा का शुभारम्भ वेद मन्त्रोच्चारण एवं वैदिक जयघोषों के साथ हुआ। जिसमें ओम् ध्वज को श्रीमती प्रभा आर्या लेकर चलीं तो अर्पित चौधरी, कु. अंकिता चौधरी एवं अन्य आर्यबालकों एवं बालिकाओं ने सहयोग दिया। शोभायात्रा का नेतृत्व रथ पर विराजमान स्वामी प्रवणानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि जी व आ. भद्रकाम वर्णी जी ने किया। शोभायात्रा में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य जी, श्री शिव कुमार मदान जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, आर्य केन्द्रीय सभा के उप प्रधान श्री विक्रम नरुला जी, श्रीमती उषा किरण आर्य जी, श्री राजेन्द्र दुर्गा जी, श्री कीर्ति शर्मा जी, श्री अजय सहगल जी, सरंक्षक श्री ओम प्रकाश घई जी, कोषाध्यक्ष श्री अरुण वर्मा जी, मंत्री श्री योगेश आर्य जी, श्री जोगिन्द्र खट्टर जी, श्री हरिओम बंसल जी, श्री एस.पी. सिंह जी, श्री सुरिन्द्र चौधरी जी के दिशा निर्देशन में आरम्भ हुआ।

शोभा यात्रा बलिदान भवन नया बाजार, लाहौरी गेट से चलकर, खारी बावली, चांदनी चौक, टाउन हाल, नई सड़क तथा अजमेरी गेट से होती हुई, लगभग तीन किलोमीटर का सफर तयकर लगभग 12.50 बजे रामलीला मैदान पहुंची, जिसमें दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, आर्य गुरूकुलों आर्य वीरदल एवं वीरांगना दलों, आर्य अनाथालयों, आर्य समाजी संस्थाओं के सदस्यों ने भाग लिया। आर्य विद्यालयों व आर्यसमाजों ने सुन्दर झाकियों को स्वामी श्रद्धानन्द एवं अन्य अनेक देश भक्तों के चित्रों, कला कृतियों, वेदमन्त्रों से लिखित बैनरों, ओ३म् की पताकाओं से ऐसा सुंदर सजाया हुआ था कि उनकी शोभा देखते ही बनती थी।

शेष पृष्ठ 6 पर

श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी जी का सम्मान

श्री कन्हैयालाल आर्य जी एवं डॉ. वेदपाल जी का सम्मान

Veda Prarthana - II
Regveda - 23

O! Learned Teachers, Help Me Obtain Virtuous Knowledge and Sharp Intellect

- Acharya Gyaneshwarya

पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह।
वसोष्पते निरमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्।
अथर्ववेद 1/1/2

Punarehi vachaspate devena manasa saha.
Vasoshpate nirmaya mayyevastu mayi shrutam.
Atharva Veda 1/1/2

This Veda mantra describes the distinct attributes of great learned teachers and gurus and how one may obtain outstanding education and learning from them. The mantra addresses the great teachers as the masters of spoken words. A great teacher knows and understands the topics he/she teaches by his/her heart, he/she does not have to open books or reference materials to impart it to the learning pupils. The teacher can accomplish this mastery only if he/she him/herself has read and understood the topic on multiple occasions in the past. Moreover, if the topic relates to spiritual and/or moral virtuous values the teacher him/herself believes in and practices those virtuous values in his/her personal life. For such teachers, their teachings are not mere words but the teachers are a living example of the teachings. Teachers who practice what they teach their learnings is deep and perfected, instead of being superficial, as many current teachers in schools and colleges happen to be.

The Second remarkable thing this Veda mantra states is that the teacher, before he/she starts to teach, should make his/her mind and thoughts virtuous and pure. Moreover, and he/she should be full of enthusiasm in teaching and put in his/her best effort for successful learning by the students. The teacher's goals always should be that I would saturate my students mind with enthusiasm for learing in all areas including the following: knowledge in general, moral values, virtuous character, dharma, faith in God, healthier personal habits to make them physically and mentally strong, selfless service to others, and love for the country. As my students grow up they would become ideal model citizens who would make the society and nation more idealistic, cultured, and well mannered. They will make their personal lives progressively better and prosperous, as well as will promote education and learning, hard work and other virtuous habits among others in the nation.

The teachers should treat the students/pupils as their own dear children, and focus not only on their formal education prescribed in books but also help them learn practical aspects of life. The teachers would have love for their students as for their own children only if they themselves have high ideals and pure virtuous character. Unless the teachers themselves live simply, wear clean simple clothes, eat satvik (that promote virtuous mind and values) healthy vegetarian foods, have gentle caring attitude, and appropriate cultured interactions with others, they will not be able to impart similar values to their students and help make them ideal model future adult citizens of the nation. The Vedic tradition has always been that a teacher not only helps his/her students receive and gain formal education as described in books but his/her manner of daily living is a live example for students to learn from and emulate.

It is essential that whatever virtuous principles, ideals, societal rules and personal disciplines a teacher wants to teach and impart his/her students, he/she must follow them in his/her personal life because otherwise they are only words. A teacher enlightens the antahkaran i.e. mind of his/her pupils with the light of his/her own personal knowledge and wisdom. Just before a matchstick can ignite a lamp or a candle, the matchstick itself has to be lit (and is consumed in the process), similarly a teacher has to enlighten his/her life before he can illuminate his/her students'minds.

To Be Continue....

पृष्ठ 5 का शेष

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ....

आर्यवीर एवं वीरांगनां दल के सदस्य अपने गणवेश में सुसज्जित पंक्तिबद्ध जयघोष करते हुए, ईश्वरभक्ति, देश-भक्ति तथा-ऋषि भक्ति से ओत्-प्रोत् जयघोष लगाते हुए, मधुर भजन संगीत गाते हुए पुरानी दिल्ली के संपूर्ण वातावरण को राष्ट्र भक्तिमय बना रहे थे। बीच-बीच में आर्यवीर एवं वीरांगनाओं के आसन-मल्खम, भाला एवं तलवार बाजी से युद्ध कौशल का प्रदर्शन कर रहे थे। बस, टैम्पो-ट्रक आदि बैनरों से सुसज्जित आर्य समाजों की टोलियां जयघोष एवं भजन कीर्तन तथा प्रेरक झांकियों से सुशोभित एवं मनोहारी प्रतीत हो रही थीं। दिल्ली के विभिन्न आर्य विद्यालयों व गुरुकुलों ने झांकियां और नुक्कड़ नाटिकाओं द्वारा बहुत प्रेरणाप्रद आर्य संदेश जनसाधारण तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया।

इस श्रंखला में 8 झाकियां सम्मिलित थी। यज्ञ की झांकी - आर्य के. सभा, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल - आर्य समाज शादी खामपुर, गुरु विरजानन्द सस्कृतकुलम-आर्यसमाज हरिनगर, नगाडा आर्यवीर दल योगाश्रम नजफगढ़, अखिल भारतीय शुद्धि सभा, दयानन्द आदर्श विद्यालय- आर्य समाज तिलकनगर, आर्यसमाज रानी बाग व आर्यसमाज कीर्तिनगर इसके लिए विशेष बधाई के पात्र हैं। पूरे रास्ते में यज्ञ की झांकी पर आर्य समाज कीर्तिनगर तथा अ. भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघं द्वारा प्रसाद बांटा गया।

शोभा यात्रा के रास्ते में ग्रेन मर्चेन्ट एसो. नया बाजार, आर्य समाज नयाबांस, महाशय धर्मपाल महाशियां दी हट्टी, आर्य समाज दीवानहॉल, आर्यसमाज पुलबंगश, आर्य समाज सीताराम बाजार, आर्य समाज मेन बाजार रानीबाग, आर्य समाज सैनिक विहार, आर्य समाज सै. 7 रोहिणी, आर्य समाज प्रशान्त विहार, दलाल गल्ला कमेटी, खारी बावली पेट्रोलियम मर्चेन्ट एसोसिएशन, आर्य वैदिक पाठशाला सोसायटी, आर्य समाज गुजरांवाला टाउन, अग्निहोत्री परिवार, आर्य समाज डी ब्लाक विकासपुरी, गली खारी कुआं चावड़ी बाजार, ओम जय साड़ी, डिसैंट हाउस, गोविंदराम हासानंद, प्रवीण खुराना, राजू खुराना व कई अन्य मार्केट एसोसिएशनों ने विभिन्न स्थानों पर न केवल स्वागत किया बल्कि दूर-दूर से आये आर्यजनों तथा विभिन्न विद्यालयों व गुरुकुलों के विद्यार्थियों को प्रसाद भी वितरण किया। यह विशाल शोभा यात्रा लगभग 12.50 बजे रामलीला मैदान पहुंच कर बृहद् सार्वजनिक सभा में परिवर्तित हो गई। जिसमें अनेक वरिष्ठ अधिकारी एवं आर्य नेता उपस्थित रहे।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में विशाल सार्वजनिक सभा का आयोजन दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में किया गया जिसका मंच संचालन श्री सुरेन्द्र रैली जी व सतीश चड्डा जी ने किया। सभा का आरम्भ ईश्वर स्तुति से तथा डॉ. विम्मी नवीन अरोड़ा, श्रीमती सुनीता चौधरी व श्रीमती बिंदु के भजनों से हुआ। श्री रोहित आर्य ने स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन पर प्रेरक कविता पाठ किया। मंच पर उपस्थिति आर्य जगत् के विद्वत्गण एवं संन्यासी वृन्द, महाशय धर्मपाल जी, श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य, श्री सुरेन्द्र रैली, श्री राजीव गुलाटी, श्री आदेश गुप्ता जी, श्रीमती उषा किरण, श्री विक्रम नरूला, श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री योगेश आर्य, श्री जोगेन्द्र खट्टर, श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री ओम प्रकाश घई, श्री कीर्ति शर्मा, आ. ऋषिपाल जी (गुरुकुल इंद्रप्रस्थ), श्री नितिंजय चौधरी, सतीश चड्डा, श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता, श्री नीरज आर्य, श्री सुरिन्द्र चौधरी शोभायमान कर रहे थे।

स्वामी धर्ममुनि जी ने अपने आशीष वचनों में स्वामी श्रद्धानन्द जी के लोकोपकारी कार्यो पर प्रकाश डालते हुए जोर देकर कहा कि आज गुरुकुल शिक्षा पद्धति का विशेष महत्व है और इसकी आवश्यकता भी है।

श्री कन्हैयालाल जी ने अपने उदबोधन में कहा कि अपने लिए और अपनों के लिए तो सभी जीवन जीते हैं, लेकिन जो वैदिक धर्म, संस्कृति और मानव समाज के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर गए, वे स्वामी श्रद्धानंद थे। समाज के उत्थान के लिए कोई तन देता है कोई मन देता है और कोई धन अर्पित करता है, लेकिन जिसने अपना तन-मन-धन सब कुछ समर्पित कर दिया, वे थे स्वामी श्रद्धानंद जी, स्वामी श्रद्धानंद जी के 92 वे बलिदान पर हम सबको आर्य समाज की सेवा का संकल्प लेना चाहिए।

आर्य जगत के विद्वान डॉ. वेदपाल जी प्रधान परोपकारिणी सभा ने अपने उदबोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानंद जी का जीवन मानव समाज के उत्थान के लिए पूर्ण रूपेण समर्पित रहा। जैसे नदी की अविरल धरा समस्त ईंट, पत्थरों को बहा कर ले जाती है। उसी तरह स्वामी श्रद्धानंद जी ने महर्षि दयानंद की प्रेरणाओं को धारण करते हुए गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की स्थापना की, शुद्धि आंदोलन चलाया, दलितों का उद्धार किया और समाज में फैली हुई कुरीतियों को मिटाते हुए निरंतर नदी की भांति वे आगे बढ़ते रहे। स्वामी जी के पवित्र जीवन से हमें प्रेरणा लेकर निरंतर आर्य समाज के उत्थान लिए सेवा कार्य करने चाहिए।

इस अवसर पर माननीय श्री राजीव गुलाटी जी डायरेक्टर एम.डी.एच को विशेष स्मृति चिन्ह तथा पीत वस्त्र से सम्मानित किया गया। श्री राजीव गुलाटी जी ने अपने उदबोधन में कहा कि अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आर्य समाज का विश्व स्तरीय आयोजन अत्यंत सफल रहा। इसके लिए मैं आयोजकों को बधाई देता हूं और 2019 में एम.डी.एच कम्पनी के 100 वर्ष पूरे होने वाले हैं। इस अवसर पर एम.डी.एच के आयोजनों में आर्य समाज का स्थान अग्रणी रहेगा। श्री राजीव गुलाटी को बोलते देखकर उनके पूज्य पिता जी महाशय धर्मपाल जी ने कहा-आज मेरा मन बहुत प्रसन्न है, मेरा बेटा मेरे सामने धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। मुझे बहुत खुशी है।

इस विशाल जनसभा में उत्तरी दिल्ली के मेयर माननीय श्री आदेश गुप्ता जी की उपस्थिति अत्यंत प्रशंसनीय रही। श्री आदेश गुप्ता जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के परोपकारी कार्यो की प्रशंसा करते हुए कहा कि जामा मस्जिद से मुस्लिमों को वैदिक उदबोधन देने वाले निर्भीक महान संन्यासी स्वामी श्रद्धानंद जी ने 30 मार्च 1919 को अंग्रेजी पुलिस की बन्दूकों के सामने अपने सीने को तानते हुए कहा था कि चलाओ गोली, इस ऐतिहासिक क्रान्तिकारी घटना को 30 मार्च 2019 को 100 वर्ष पूरे होने वाले हैं। इस ऐतिहासिक घटना का हम शताब्दी महोत्सव के रूप में मनाएगे, जिसमें भारत के प्रधनमंत्री मोदी जी को भी बुलाने का पूरा प्रयास किया जाएगा।

श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्वामी श्रद्धानंद के जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश देते हुए आर्यजनों को संबोधित करते हुए कहा कि 30 मार्च 2019 को स्वामी श्रद्धानंद के जीवन से जुड़ी क्रान्तिकारी ऐतिहासिक घटना के रूप में शताब्दी महोत्सव का विशाल आयोजन किया जाएगा। जिसमें देश-विदेश से आर्यजन भाग लेंगे और यह कार्यक्रम अपने आपमें एक विशेष आयोजन सिद्ध होगा।

इस अवसर पर समाज के मूर्धन्य विद्वान् एवं कार्यकर्त्ताओं में डॉ. वेदपाल जी, सुपुत्र महाशय रघुबीर सिंह आर्य को श्री वेदप्रकाश कथूरिया स्मृति पुरस्कार,

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

आर्य समाज शकरपुर में स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस

आर्य समाज शकरपुर दिल्ली ने 24 दिसम्बर को भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के सहयोग से स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रवि बहल मंत्री आर्यसमाज निर्माण ने की। इस अवसर पर विभिन्न वक्ताओं में श्री दीपक गुप्ता प्रांतीय धर्म प्रचारक, प्रो. रमेश गोयल, भारतीय शुद्धि सभा के श्री चतर सिंह नागर व आर्य समाज के धर्माचार्य श्री यशपाल शास्त्री ने विस्तार से श्रद्धानन्द की राष्ट्र के प्रति योगदान को विस्तार से बताया। कार्यक्रम का संचालन यशस्वी मंत्री श्री पतराम त्यागी ने किया।

इस अवसर पर वेद प्रकाश वानप्रस्थी, नंद कुमार वर्मा, विजय प्रकाश शास्त्री, ओम प्रकाश रोहिल, विनोद सिंघल, अशोक शर्मा, लखमी त्यागी, अनिल त्यागी, आदित्य त्यागी तथा सुरेंद्र कुमार रैली कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया एवं स्थानीय जनता ने कार्यक्रम की भूरी भूरी प्रशंशा की। - ***मन्त्री***

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018
कूपनों पर एकत्र की गई राशि यथाशीघ्र भेजें

आप सभी के सहयोग सदभाव के साथ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली का आयोजन सफलता के साथ 25 से 28 अक्तूबर तक स्वर्ण जन्यन्ती पार्क, रोहिणी में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के विशाल कार्य पर बहुत अधिक राशि का व्यय हुआ है। अत: सभी दानदाताओं एवं दान एकत्र करने करने वाले आर्य महानुभावों/आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे अपनी दान राशि तथा कूपनों पर एकत्र की गई दान राशियां कूपन सहित शीघ्रतिशीघ्र सभा कार्यालय में भेज देवें। इसी के साथ जो सज्जन महासम्मेलन में अपनी आहुति अभी तक न दे सकें तो उनसे भी निवेदन है कि वे भी अपनी आहुति आवश्य ही भेजें। आप अपनी दान राशि एवं कूपनों पर एकत्र सहयोग राशि सीधे सम्मेलन बैंक खाते में भी नकद/चैक द्वारा जमा करा सकते हैं। कृपया अपनी सहयोग राशि/एकत्र की गई राशि का चैक **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन- 2018'** के नाम बनाएं। कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त श्री मनोज नेगी जी (9540040388) को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लीप की फोटो व्हाट्सएप्प करें अथवा अपने नाम पते के साथ aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें, ताकि आपको राशि की रसीद भेजी जा सके। बैंक खाते का विवरण इस प्रकार है -

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन- 2018'
A/c No. 918010068587610 IFSC Code : UTIB0002193
Axis Bank, Cannought Place, New Delhi

पृष्ठ 6 का शेष

श्री महेन्द्र गर्ग सुपुत्र श्री सुरेन्द्र गर्ग को पं. ब्रह्मानन्द शर्मा आर्य कार्यकर्त्ता पुरस्कार, श्री ओमप्रकाश यजुर्वेदी सुपुत्र: श्री बाबु लाल को श्री लख्मी चन्द भूरो देवी स्मृति पुरस्कार व आ. अखिलेश भारती सुपुत्र: श्री काशी राम को महात्मा प्रभु आश्रित स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री कन्हैयालाल, महामंत्री, परोपकारिणी सभा को सम्मानित किया गया। श्री सतीश राय आस्ट्रेलिया को सपत्नीक सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानंद जी के प्रेरणाप्रद जीवन पर आधारित विशेष नाटिका, आर्य समाज यमुना विहार के बच्चों द्वारा प्रस्तुत की गई। नाटिकाओं के इस क्रम में तिहाड़ गुरुकुल के बच्चों ने डोला-पालकी नाटिका की प्रस्तुत की।

अपार जनसमूह जो इस विशाल कार्यक्रम में भाग लेने, सुबह-सुबह बिना भोजन किये आते हैं, उन सबकी भोजन व्यवस्था की सेवा ने विशेष कर श्री देवेन्द्र आर्य एवं परिवार, सुखबीर सिंह आर्य, श्री वीरेन्द्र आर्य एवं परिवार, आचार्य सत्य प्रकाश, श्री नीरज आर्य व आर्य गुरुकुल तिहाड़ के ब्रह्मचारी, देवन्द्र सचदेवा, ब्रजेश आर्य व इनके साथियों ने महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास किया।

बलिदान दिवस की व्यवस्थाओं के लिए सर्वश्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य, राजेन्द्र दुर्गा, अरुण प्रकाश वर्मा योगेश आर्य, सुरिन्द्र चौधरी, डा. मुकेश आर्य, जोगिन्द्र खट्टर, एस.पी. सिंह, हरिओम बंसल, चतर सिंह नागर, जय प्रकाश शास्त्री, सहदेव शास्त्री, दिनेश शास्त्री, संदीप आर्य, अशोक कुमार, का विशेष योगदान रहा, सभी दानदाताओं व सहयोगियों का साधुवाद है।

- ***सतीश चड्डा, महामन्त्री***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा/ आर्यसमाज दिल्ली से सम्बन्धित नवीनतम सूचनाओं व जानकारियों हेतु जुड़ें व्हाट्सएप्प पर और साझा करें विचार

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018
अपने अनुभव एवं सुझाव भेजें

आप जानते ही हैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली 25 से 28 अक्तूबर तक स्वर्ण जन्यन्ती पार्क, रोहिणी में सम्पन्न हो चुका है।

इस ऐतिहासिक महासम्मेलन के सम्बन्ध में प्रत्येक आर्य महानुभाव के अपने अनुभाव हैं। इसी प्रकार किसी के मन में किसी व्यवस्था के प्रति कोई शिकायत, किसी के मन में कोई जिज्ञासा तो किसी के मन में सम्मेलन की व्यवस्था में सुधार हेतु सुझाव होंगे। सभा आपके अनुभवों, जिज्ञासाओं, शिकायतों, सुझावों को लेकर आगामी आर्य महासम्मेलन को और भी अधिक व्यवस्थित, सुखद, प्रेरक बनाने का प्रयास करती है। अत: आपसे निवेदन है कि यदि आपके मन में कोई प्रश्न, सुझाव, अनुभव, जिज्ञासा हो तो कृपया उसे लिखकर सम्मेलन कार्यालय को अवश्य भेजें, इससे सम्मेलन के संयोजकों को जहां आगे के सम्मेलनों के लिए प्रेरणा मिलेगी वहीं ऐसे सम्मेलनों का एक इतिहास भी आपके अनुभवों से ही निर्मित हो सकेगा। आपके इन अनुभवों, सुझावों, विचारों ग्रहण करते हुए सभा एक पत्रिका का भी प्रकाशन कर रही है आप इसमें अपने द्वारा लिए गए चित्रों को अपने अनुभवों 'महासम्मेलन जैसा मैंने देखा' के अन्तर्गत प्रकाशित करने हेतु भी अवश्य भेजें। आप हमें aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भी कर सकते हैं।

- ***सम्मेलन संयोजक***

वैदिक सत्संग समारोह

आर्यसमाज राजनगर -2, पालम कालोनी में दिनांक 12-13 जनवरी, 2019 को वैदिक सत्संग समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर भजनोपदेशिका सुश्री पुष्पा शास्त्री जी के भजन-प्रवचन होंगे।

- ***हंसराज आर्य, मन्त्री***

आवश्यकता है

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को अपने विभिन्न प्रकाशकीय कार्यों के लिए एक सुयोग्य सम्पादक की अवश्यकता है, जो सभा के मुख पत्र आर्य सन्देश तथा प्रकाशित होने वाले साहित्य के टाइपिंग, प्रूफरीडिंग, सैटिंग का कार्य निपुणता के साथ कर सके। आर्यसमाज एवं वैदिक परम्पराओं से ओत-प्रोत अभ्यर्थियों को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक अभ्यर्थी अपना बायोडाटो ***aryasabha@yahoo.com*** पर भेजें।

- *महामन्त्री*

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित
सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा - 2019
भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी ध्यान दें

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो वर्ष 2019 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज एग्जामिनेशन में भाग लेना चाहते हैं, अर्थित एवं मूलभूत आवश्यकताओ के अभाव के कारणों से परीक्षा तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर।

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के लिए प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने की घोषणा की जाती है। योजना का लाभ प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों को एक लिखित/मौखिक एवं बौद्धिक परीक्षा पास करनी होगी। सफल परीक्षार्थियों में से प्रथम 40 अभ्यर्थियों को दिल्ली में आमन्त्रित करके, भोजन, आवास एवं तत्सम्बन्धी समस्त सुविधाएं निशुल्क प्रदान की जाएंगी तथा प्रशिक्षण की तैयारियां कराई जाएंगी। इस योजना का लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने शैक्षिक प्रमाण पत्रों, वित्तीय स्थिति के विवरण तथा आवश्यक कागजातों की प्रति के साथ अपना आवेदन पत्र संस्थान की ईमेल आई.डी. dss.pratibha@gmail. com पर ईमेल करें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540002856 पर सम्पर्क करें। परीक्षा की तिथि शीघ्र ही घोषित की जाएगी। - ***व्यवस्थापक***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 27-28 दिसम्बर, 2018
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 26 दिसम्बर, 2018

कुम्भ मेला : 15 जनवरी से 19 फरवरी, 2018

प्रयागराज कुम्भ में वैदिक साहित्य

सैक्टर 11	सैक्टर 14	सैक्टर 19
मुक्ति मार्ग, पश्चिम पट्टी प्रयागराज	तुलसी मार्ग (प.) सै. कार्यालय के सामने	सच्चा आश्रम के सामने निकट सै. कार्यालय

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा प्रयाग द्वारा इस वर्ष आयोजित होने वाले कुम्भ मेले में आर्यसमाज की उपस्थित दर्ज कराने एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के मतव्यों, मान्यताओं, विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए तीन स्थानों पर प्रचार स्टाल आयोजित कर रहा है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा भी इस कार्य में पूर्णत: सहयोगी बनते हुए वैदिक साहित्य का प्रचार करने जा रही है। यह कुम्भ मेला प्रयागराज (इलाहाबाद) में 15 जनवरी से 19 फरवरी तक आयोजित होगा। उ.प्रदेश शासन की ओर से मेले की वृहद् तैयारियां तथा चाक-चौबन्द सुरक्षा व्यवस्था की गई है।

समस्त आर्यजनों, महर्षि दयानन्द के अनुयायिओं, आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं, अधिकारियों एवं सदस्यों तथा समस्त पाठकवृन्दों से निवेदन है कि इस वर्ष के कुम्भ मेले में आर्यसमाज के प्रचार स्टाल पर अवश्य ही पहुंचकर कार्यकर्ताओं का उत्सावहध्नि करें एवं कुम्भ में प्रचार के माध्यम से एक बार फिर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराने में सहयोगी बनें। मेले में किसी भी प्रकार के सहयोग के लिए श्री अजेय कुमार मेहरोत्रा (9305990143)अथवा श्री राजेन्द्र कपूर जी (7007796112, 8687735001) से सम्पर्क करें।

- विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली सभा

प्रतिष्ठा में,

खुशखबरी! खुशखबरी!! खुशखबरी!!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वर्ष 2019 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दूरभाष: 23360150, 9540040339

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास

आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

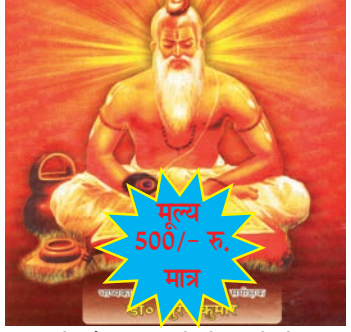

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

मूल्य : ~~600~~/- 500/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

इन्हें कौन नहीं जानता!

इनके जीवन की हकीकत जानिये कहानी उन्हीं की जुबानी

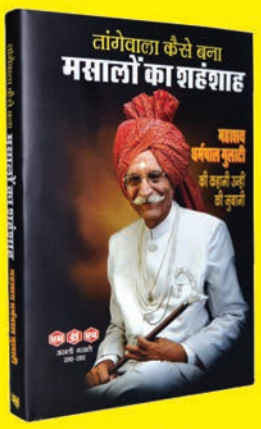

मूल्य: रु0: ~~325/-~~ 150/- पृष्ठ: 240/-

नई दिल्ली से कुतुबरोड़ तक एक तांगा चलाने वाला कैसे बना मसालों का शहंशाह

इनके जीवन को नई दिशा दिखाने वाले सफलता प्राप्ति के मूलमंत्र

मूल्य: रु0: ~~350/-~~ 200/- पृष्ठ: 168/-

इस पुस्तक का एक-एक अध्याय आपके जीवन को नई दिशा प्रदान कर सकता है।

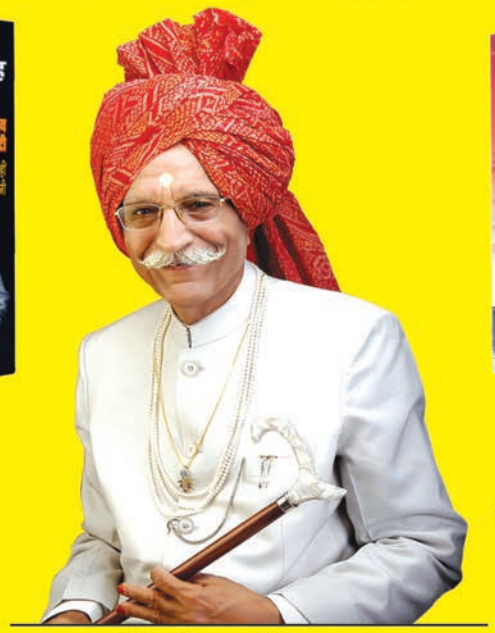

(चेयरमैन, एम.डी.एच. ग्रुप)

"मैंने जिस तरह कठिन परिस्थितियों से संघर्ष करके सफलता प्राप्त की है वह लोगों के लिए भी मार्गदर्शक साबित हो सकती है।
आप इन किताबों को पढ़ें और मुझे अपने विचार लिख भेजें।
आपके पत्र की प्रतीक्षा में"

महाशय धर्मपाल

MDH असली मसाले सच-सच

-: पुस्तक मंगाने के लिए कृप्या लिखें अथवा फोन पर सम्पर्क करें :-

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह